

॥ १९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इतिकर्णप० नैल० आरतभा० त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ अत्र

श्रुतकर्मैति ॥ १ ॥ अत्र

॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥ अत्र

विरथावसिषुद्वायसमाजग्मतुराहवे ॥ शतचंद्रचितेगृह्यचर्मणीसुभुजौतथा ॥ २९ ॥ विरोचतां महारंगे निखिशवरधारिणौ ॥ यथादेवासुरेयुद्धे जंभशक्रौम
हाबलौ ॥ ३० ॥ मंडलानिततस्तौ विचरंतौ महारणे ॥ अन्योन्यमभितस्तर्णसमाजग्मतुराहवे ॥ ३१ ॥ अन्योन्यस्यवधे चैव चक्रतुर्धनमुत्तमं ॥ कैकेयस्य द्वि
धा चर्म ततश्चिच्छेदसात्वतः ॥ ३२ ॥ सात्यकेस्तु तथैवासौ चर्मचिच्छेदपार्थिवः ॥ चर्मच्छित्वा तु कैकेयस्तारागणशतैर्द्वितं ॥ ३३ ॥ चचारमंडलान्येव गतप्रत्या
गतानि च ॥ तंचरंतं महारंगे निखिशवरधारिणं ॥ ३४ ॥ अपहस्तेन चिच्छेदशैनेयस्वरयान्वितः ॥ सवर्माकिकयो राजन द्विधा छिन्नो महारणे ॥ ३५ ॥ निपपात
महेष्वासो वजाहत इवाचलः ॥ तं निहत्यरणेशूरः शैनेयोरथ सत्तमः ॥ ३६ ॥ युधामन्युरथ तूष्णमारुरो ह परंतपः ॥ ततो न्यरथमास्याय विधिवत्कल्पितं पुनः ॥ ३७ ॥
कैकयानां महत्सैन्यं व्यधमत्सात्यकिः शैरैः ॥ सावध्यमाना समरे कैकयानां महाचमूः ॥ तमुत्सृज्य रणेशु त्रुप्रदुद्राव दिशो दश ॥ ३८ ॥ इति श्रीमहाभारते कर्णप०
विद्वानुविदवधे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ ५३ ॥ श्रुतकर्मा ततो राजंश्चित्रसेनं च ममुखे ॥ नाराचेन सुतीक्ष्णेन म
॥ १ ॥ अभिसारस्तु तं राजन्मवभिर्नतपर्वभिः ॥ श्रुतकर्माणमाहृत्य सूतं विव्याध पंचभिः ॥ २ ॥ श्रुतकर्मा ततः क्रुद्धश्चित्रसेनं च ममुखे ॥ नाराचेन सुतीक्ष्णेन म
मदेशे समारपयत् ॥ ३ ॥ सोतिविद्धो महाराजनाराचेन महात्मना ॥ मूर्छामभिययौ वीरः कश्मलं चाविवेश ह ॥ ४ ॥ एतस्मिन्नंतरे चैनं श्रुतकर्मा तं महायशः ॥
नवत्याजगतीपालं छादयामास पत्रिभिः ॥ ५ ॥ प्रतिलभ्यतः संज्ञां चित्रसेनो महारथः ॥ धनुश्चिच्छेदभेदेन तं च विव्याध सप्तभिः ॥ ६ ॥ सोन्यल्कामुक्तामादा
यवेगर्भं रुक्मभूषितं ॥ चित्ररूपं च केचित्रसेनं शरोर्मिभिः ॥ ७ ॥ सशरैश्चित्रितो राजा चित्रमाल्यधरो युवा ॥ युवेव समरेऽशोभद्गोष्ठीमध्ये स्वलंकृतः ॥ ८ ॥ श्रु
तकर्माणमथैव नाराचेन स्तनांतरे ॥ बिभेद वरसाशू रस्तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ९ ॥ श्रुतकर्मापि समरे नाराचेन समर्पितः ॥ सुस्त्रावरुधिरं तत्र गौरिकाद्र इवाचलः
॥ १० ॥ ततः सरुधिराक्तगोरुधिरेण कृतच्छविः ॥ रराज समरे वीरः सपुष्प इव किंशुकः ॥ ११ ॥ श्रुतकर्मा ततो राजन् शत्रुणा समभिद्रुतः ॥ शत्रुसंवारणं क्रुद्धो
॥ १२ ॥ ततः सरुधिराक्तगोरुधिरेण कृतच्छविः ॥ रराज समरे वीरः सपुष्प इव किंशुकः ॥ १३ ॥ मूर्छां अर्धनिद्रां कश्मलं अचित्तत्वं ॥ १४ ॥ एनं
द्विधा चिच्छेद कर्मुकं ॥ १५ ॥ तं श्रुतकर्माणं ॥ १६ ॥ सशरैरिति गोष्ठीगोयूथपः सांडो महोक्षः स यथाभ्यांगदौ अलंकृत एव स शरैरलंकृत इत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ कृतच्छविः आहितशोभः ॥ १९ ॥ २० ॥

सरोभिसाराधिपतिश्चित्रसेनः आहृत्य संताड्य ॥ २१ ॥ मूर्छां अर्धनिद्रां कश्मलं अचित्तत्वं ॥ २२ ॥ एनं
द्विधा चिच्छेद कर्मुकं ॥ २३ ॥ तं श्रुतकर्माणं ॥ २४ ॥ सशरैरिति गोष्ठीगोयूथपः सांडो महोक्षः स यथाभ्यांगदौ अलंकृत एव स शरैरलंकृत इत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ कृतच्छविः आहितशोभः ॥ २७ ॥ २८ ॥